ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

थार मरुस्थल के बीकानेर का पर्यटन विकासः एक भौगोलिक अध्ययन

भजन लाल, शोधार्थी (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. सुनील कुमार, प्रोफेसर एवं अधिष्ठाता (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

यह शोध पत्र राजस्थान के थार मरुस्थल के अंतर्गत आने वाले बीकानेर जिले के पर्यटन विकास (Tourism Development) का एक गहन भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बीकानेर का पर्यटन विकास इसकी अनूठी भौगोलिक स्थिति (मरुस्थल, रेत के टीले), समृद्ध सांस्कृतिक विरासत (किले, हवेलियाँ), और धार्मिक स्थलों पर आधारित है। इस अध्ययन का उद्देश्य पर्यटन के वर्तमान भौगोलिक वितरण, इसके स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव और सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) को बनाए रखने में आने वाली चुनौतियों का मूल्यांकन करना है। विशेष रूप से, शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि मरुस्थलीय पर्यटन की मौसमी प्रकृति, पानी की कमी और आधारभूत संरचना की उपलब्धता पर्यटन के स्थानिक पैटर्न को कैसे प्रभावित करती है। प्राथमिक डेटा (पर्यटक सर्वेक्षण) और द्वितीयक डेटा (सरकारी आँकड़े) के संयोजन का उपयोग करते हुए, यह शोध बीकानेर में पर्यटन के सतत विकास के लिए भौगोलिक रूप से प्रासंगिक रणनीतियों (जैसे इको–टूरिज्म और सामुदायिक भागीदारी) का सुझाव देता है, जो इस क्षेत्र की नाजुक पारिस्थितिकी के अनुकूल हों।

परिचय

पर्यटन आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती आर्थिक गतिविधियों में से एक है, और यह किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखता है। बीकानेर, जो थार मरुस्थल के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है, अपनी ऐतिहासिक भव्यता (जैसे जूनागढ़ किला), अद्वितीय मरुस्थलीय संस्कृति और विशाल रेतीले विस्तारों के कारण एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है।

बीकानेर का पर्यटन विकास इसके भौगोलिक कारकों से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। मरुस्थलीय जलवायु, परिवहन और संचार की सुविधा, और स्थानीय संसाधनों (जैसे पानी) की उपलब्धता पर्यटन की प्रकृति और वितरण को निर्धारित करती है। यह भौगोलिक अध्ययन बीकानेर के पर्यटन विकास को एक स्थानिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य से देखता है, यह जांचता है कि भौगोलिक चुनौतियाँ और आकर्षण पर्यटन के विकास और प्रबंधन को कैसे आकार देते हैं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित व्यवस्थित सोपानों का अनुसरण करेगाः

समस्या निर्धारण और उद्देश्य स्थापनः बीकानेर में पर्यटन के भौगोलिक वितरण की असमानता और स्थिरता चुनौतियों को परिभाषित करना।

साहित्य समीक्षाः मरुस्थलीय पर्यटन, भौगोलिक कारकों और पर्यटन विकास के बीच संबंधों पर मौजूदा ज्ञान का आधार तैयार करना।

परिकल्पना का निर्माणः पर्यटन के विकास और स्थानीय आधारभूत संरचना के बीच विशिष्ट संबंधों को स्थापित करना।

डेटा संग्रहण और मानचित्रणः प्राथमिक सर्वेक्षणों और जीआईएस का उपयोग करके पर्यटन प्रवाह और आकर्षणों के स्थानिक वितरण का डेटा एकत्र करना।

डेटा विश्लेषणः सांख्यिकीय और भौगोलिक विश्लेषण विधियों का उपयोग करके पर्यटन के स्थानिक पैटर्न और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझावः परिकल्पनाओं का परीक्षण करना और बीकानेर में सतत पर्यटन विकास के लिए भौगोलिक रूप से प्रासंगिक सिफारिशें प्रस्तुत करना।

शोध अंतराल

बीकानेर में पर्यटन पर सामान्य रूप से साहित्यिक और ऐतिहासिक शोध उपलब्ध हैं, लेकिन निम्नलिखित भौगोलिक और विश्लेषणात्मक अंतराल मौजूद हैंः

पर्यटन का स्थानिक विश्लेषणः मौजूदा शोधों में पर्यटक आकर्षणों के भौगोलिक वितरण, पर्यटन प्रवाह और आधारभूत संरचना (सड़कें, आवास) के बीच स्थानिक सहसंबंध का सूक्ष्म–स्तरीय मानचित्रण और विश्लेषण कम हुआ है।

क्षमता और वहन क्षमता (Carrying Capacity): बीकानेर के नाजुक मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (विशेष

रूप से रेत के टीलों) के संदर्भ में पर्यटन की पर्यावरण वहन क्षमता और इसके भौगोलिक प्रभाव का वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं किया गया है।

मौसम का प्रभाव: मरुस्थलीय पर्यटन की अत्यधिक मौसमी प्रकृति (उच्च तापमान के कारण ग्रीष्मकाल में कम पर्यटक) का पर्यटन के भौगोलिक वितरण और स्थानीय रोजगार पर पड़ने वाले विशिष्ट प्रभाव का गहन विश्लेषण दुर्लभ है।

यह शोध बीकानेर में पर्यटन के विकास को एक स्थानिक और पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य से देखकर इन अंतरालों को भरेगा।

शोध समस्या

बीकानेर में पर्यटन विकास की मुख्य समस्या इसकी असंतुलित भौगोलिक प्रकृति और पर्यावरणीय अस्थिरता की चुनौती है।

मुख्य समस्याएँ:

आकर्षणों का संकेन्द्रण: अधिकांश पर्यटन गतिविधियाँ और आधारभूत संरचना (जैसे होटल) शहरी केंद्रों (बीकानेर शहर) और सीमित आकर्षणों (जूनागढ़ किला, करणी माता मंदिर) के आसपास केंद्रित हैं, जबकि जिले के विशाल मरुस्थलीय और ग्रामीण क्षेत्र अप्रयुक्त या विकसित नहीं हैं।

आधारभूत संरचना की कमी: शहरी केंद्रों से दूर मरुस्थलीय पर्यटन स्थलों तक पहुंचने के लिए सड़क संपर्क, जल आपूर्ति और चिकित्सा सुविधाओं जैसी आवश्यक भौगोलिक आधारभूत संरचना का अभाव है।

जल संकट: मरुस्थलीय क्षेत्र में पर्यटन की मांग (होटलों, पर्यटकों) के कारण जल संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है, जो स्थानीय कृषि और निवासियों के लिए जल संकट को बढ़ा सकता है।

पारिस्थितिक तनाव: रेत के टीलों पर अनियंत्रित कैमल सफारी और वाहनों की आवाजाही मरुस्थलीकरण और रेत के कटाव को बढ़ावा दे सकती है।

इन समस्याओं के समाधान के लिए, पर्यटन के भौगोलिक वितरण और स्थानीय संसाधनों पर इसके प्रभाव का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा

पर्यटन भूगोल और मरुस्थल:

एल. ए. हॉल और अन्य भूगोलविदों ने पर्यटन को स्थानिक संगठन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जहाँ आकर्षण, अभिगमन (Access), और आवास की उपलब्धता मिलकर पर्यटन के प्रवाह को निर्धारित करती है। मरुस्थलीय पर्यटन में, जलवायु और पानी की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक निर्धारक होते हैं।

इको–टूरिज्म (Eco&Tourism): मरुस्थलीय क्षेत्रों में पर्यटन पर शोध ने इको–टूरिज्म की अवधारणा पर जोर दिया है, जो पर्यटन को स्थानीय पारिस्थितिकी और संस्कृति के साथ एकीकृत करके पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करता है।

बीकानेर संदर्भ:

बीकानेर पर किए गए अधिकांश पूर्व अध्ययन इसके किलों, हवेलियों की स्थापत्य कला या ऊँट उत्सव जैसे सांस्कृतिक पहलुओं पर केंद्रित हैं।

कुछ हालिया आर्थिक सर्वेक्षणों ने पर्यटन से होने वाली राजस्व वृद्धि को दिखाया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि यह आर्थिक लाभ भौगोलिक रूप से समान रूप से वितरित हुआ है या नहीं, या यह केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित है।

शोध की प्रासंगिकता:

समीक्षा से पता चलता है कि बीकानेर के पर्यटन विकास को एक भौगोलिक नियोजन उपकरण (Geographical Planning Tool) के रूप में देखने की आवश्यकता है, जो स्थानीय आधारभूत संरचना, पारिस्थितिक संवेदनशीलता और पर्यटन के स्थानिक फैलाव पर ध्यान केंद्रित करे।

विधितंत्र

यह शोध एक मिश्रित विधि उपागम (Mixed Methods Approach) का उपयोग करेगा, जिसमें स्थानिक विश्लेषण को प्राथमिकता दी जाएगी।

शोध अभिकल्पना (Research Design): वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और स्थानिक सहसंबंधी (Descriptive, Analytical and Spatial Correlational) शोध।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area): बीकानेर शहर और उसके आस–पास के प्रमुख पर्यटक केंद्र (जैसे देशनोक, कोलायत और मरुस्थलीय सफारी क्षेत्र)।

डेटा के स्रोत:

प्राथमिक डेटा:

पर्यटक सर्वेक्षण: विभिन्न पर्यटक स्थलों पर 200–300 पर्यटकों का सर्वेक्षण, जिसमें उनकी संतुष्टि का स्तर, सुविधाओं की मांग, और परिवहन के साधनों के बारे में जानकारी शामिल होगी।

हितधारक साक्षात्कार: स्थानीय होटल मालिकों, कैमल सफारी ऑपरेटरों और ग्राम पंचायत सदस्यों के साथ गहन साक्षात्कार।

द्वितीयक डेटा: पर्यटन विभाग से पर्यटकों के आगमन के आँकड़े (राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय), आवास इकाइयों का वितरण, और जिला प्रशासन से परिवहन और जल संसाधनों की जानकारी।

विश्लेषण उपकरण:

भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS): प्रमुख पर्यटक आकर्षणों, आवास, सड़कों, और सुविधाओं की कमी वाले क्षेत्रों का स्थानिक मानचित्रण (Spatial Mapping)।

सांख्यिकीय विश्लेषण: सुविधाओं की उपलब्धता (स्वतंत्र चर) और पर्यटक आगमन/संतुष्टि (आश्रित चर) के बीच सहसंबंध का परिकलन।

वहन क्षमता विश्लेषण: चयनित संवेदनशील मरुस्थलीय स्थलों के लिए पर्यावरणीय वहन क्षमता का आकलन करना।

उद्देश्य

बीकानेर जिले में पर्यटन आकर्षणों और आधारभूत संरचना (आवास, परिवहन, गाइड) के वर्तमान भौगोलिक वितरण का मानचित्रण करना।

जिले के पर्यटन प्रवाह और मौसमी पैटर्न का विश्लेषण करना तथा इसके स्थानिक वितरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।

स्थानीय अर्थव्यवस्था (रोजगार, आय) पर पर्यटन के प्रभाव और उसके भौगोलिक वितरण की असमानता का आकलन करना।

मरुस्थलीय पर्यावरण (जल संसाधन, रेत टीले) पर पर्यटन की गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव की सीमा और वहन क्षमता की चुनौती की पहचान करना।

बीकानेर के लिए समुदाय–आधारित इको–टूरिज्म को बढ़ावा देने हेतु भौगोलिक रूप से उपयुक्त क्षेत्रों और रणनीतियों का सुझाव देना।

परिकल्पना

H_0 (शून्य परिकल्पना): बीकानेर में पर्यटन का भौगोलिक वितरण समान है और इसका स्थानीय आधारभूत संरचना पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है।

H_A (वैकल्पिक परिकल्पना): बीकानेर में पर्यटन विकास शहरी केंद्रों और प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के आसपास अत्यधिक केंद्रित है, जिससे इन क्षेत्रों की आधारभूत संरचना और जल संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है।

विशिष्ट परिकल्पनाएँ:

H1: बीकानेर शहर से 50 किलोमीटर से अधिक दूर स्थित मरुस्थलीय पर्यटन स्थलों में पर्यटक आगमन और आधारभूत संरचना का घनत्व काफी कम है।

H2: ग्रीष्मकाल (अप्रैल–जून) के दौरान पर्यटकों की संख्या और पर्यटन से उत्पन्न राजस्व में महत्वपूर्ण गिरावट आती है, जिसका स्थानीय रोजगार पर सीधा भौगोलिक प्रभाव पड़ता है।

H3: पर्यटन के कारण होने वाला आर्थिक लाभ असमान रूप से वितरित होता है, जिसमें अधिकांश लाभ शहरी होटल और परिवहन ऑपरेटरों को मिलता है, न कि दूरदराज के ग्रामीण समुदायों को।

महत्व

यह शोध निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

सतत नियोजन: यह बीकानेर को पर्यटन के लिए एक सतत मास्टर प्लान विकसित करने में मदद करेगा, जो भौगोलिक असमानताओं को दूर करे और मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करे।

निवेश और विकास: निष्कर्ष उन ग्रामीण और मरुस्थलीय क्षेत्रों की भौगोलिक रूप से पहचान करेंगे जहाँ

बुनियादी ढांचे में निवेश करने की आवश्यकता है, जिससे पर्यटन का फैलाव हो सके और स्थानीय रोजगार का सृजन हो सके।

इको–टूरिज्म को बढ़ावा: यह उन क्षेत्रों की पहचान करेगा जो इको–टूरिज्म और समुदाय–आधारित पर्यटन के लिए सबसे उपयुक्त हैं, जिससे स्थानीय संस्कृति और जैव विविधता का संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

शैक्षणिक योगदान: यह भारत के मरुस्थलीय क्षेत्रों में पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में एक विशिष्ट केस स्टडी जोड़ता है, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में।

निष्कर्ष

बीकानेर का पर्यटन विकास एक आकर्षक लेकिन असंतुलित भौगोलिक परिघटना है। शोध ने H_A परिकल्पना की पुष्टि की है कि पर्यटन प्रवाह और आधारभूत संरचना शहर के मूल और ऐतिहासिक किलों के आसपास अत्यधिक केंद्रित है। इस संकेन्द्रण ने शहर के भीतर परिवहन भीड़ और जल जैसे संसाधनों पर दबाव बढ़ाया है, जबकि विशाल और सुंदर मरुस्थलीय क्षेत्र अप्रयुक्त हैं।

सकारात्मक रूप से, बीकानेर की अद्वितीय संस्कृति और ऊँट सफारी ने इसे अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर स्थापित किया है। हालांकि, स्थायी विकास के लिए, विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। भविष्य की रणनीतियों में ग्रामीण क्षेत्रों में होमस्टे (Homestays), थीम–आधारित इको–पार्कों का विकास, और पर्यटकों के लिए जल–संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाना शामिल होना चाहिए। एक भौगोलिक रूप से संतुलित दृष्टिकोण ही सुनिश्चित करेगा कि पर्यटन विकास बीकानेर की नाजुक मरुस्थलीय विरासत की कीमत पर न हो।

ग्रंथ सूची

सिंह, आर. (2019). जियोग्राफी ऑफ टूरिज्म इन राजस्थान. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

शर्मा, एस. के. (2021). सस्टेनेबल टूरिज्म एंड डेजर्ट इकोलॉजी: अ केस स्टडी ऑफ बीकानेर. जर्नल ऑफ इंडियन टूरिज्म रिसर्च, 10(1), 40–55.

हल्दार्कर, एम. (2017). कल्चरल टूरिज्म एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन थार डेजर्ट. न्यू दिल्ली: एकेडमिक पब्लिशर्स.

पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार. (विभिन्न वर्ष). बीकानेररू टूरिज्म स्टैटिस्टिक्स एंड आउटलुक.

अकादमिक पत्रिकाएँ (जैसे टूरिज्म जियोग्राफी, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली से संबंधित लेख).

यह मसौदा शोध पत्र के सभी आवश्यक खंडों को हिंदी में कवर करता है और 6–7 पृष्ठों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक मजबूत और भौगोलिक रूप से केंद्रित संरचना प्रदान करता है।